Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **लोथल ।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

लोथल ।

लोथल प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में से एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर है। लगभग 2400 ईसापूर्व पुराना यह शहर भारत के राज्य गुजरात के भाल क्षेत्र में स्थित है और इसकी खोज सन 1954 में हुई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस शहर की खुदाई 13 फ़रवरी 1955 से लेकर 1962 के मध्य एस. आर. राव के निर्देशन में की थी। खुदाई में यहां 2 मील के घेरे में बसे हुए एक नगर के अवशेष प्राप्त हुए ।लोथल, अहमदाबाद जिले के धोलका तालुका के गाँव सरागवाला के निकट स्थित है। अहमदाबाद-भावनगर रेलवे लाइन के स्टेशन लोथल भुरखी से यह दक्षिण पूर्व दिशा में 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लोथल अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर और धोलका शहरों से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा है जिनमें से सबसे करीबी शहर धोलका और बगोदरा हैं।लोथल को मिनी हडप्पा के नाम से भी जाना जाता है।

गुजरात में लोथल की अवस्थिति लोथल गोदी जो कि

विश्व की प्राचीनतम ज्ञात गोदी है। यहां की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि पक्की ईंटों का बना हुआ विशाल आकार (214 गुना 36 मीटर) का एक घेरा है जिसे राव महोदय ने जहाजों की गोदी (डॉक यार्ड) बताया है। इसकी ऊपरी दीवार में 12 मीटर चौड़ा प्रवेश द्वार था जिससे होकर जहाज आसानी से आते जाते थे । यह नहर द्वारा भोगवा नदी से जोड़ा गया था तथा इसी के जरिए गोदी में पानी आता था। दक्षिणी दीवार में 1 मीटर चौड़ी एक नाली बनाई गई थी जिससे अतिरिक्त पानी बाहर निकाला जाता था।गोदीबाड़ा की प्राप्ति से नगर के प्रसिद्ध बंदरगाह होने का पता लगता है। इसी से सटा हुआ एक गोदाम था जहां व्यापार का माल अस्थाई तौर पर रखा जाता था दोनों के बीच बड़ा दुर्ग स्थित था जहां रहने वाले लोग संभवत यहां की गतिविधियों पर निगरानी रखते होंगे । सिंधु में स्थित हड़प्पा के शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच बहने वाली साबरमती नदी की प्राचीन धारा के द्वारा शहर से जुड़ी थी, जो इन स्थानों के मध्य एक व्यापार मार्ग था। उस समय इसके आसपास का कच्छ का मरुस्थल, अरब सागर का एक हिस्सा था। प्राचीन समय में यह एक महत्वपूर्ण और संपन्न व्यापार केंद्र था जहाँ से मोती,

जवाहरात और कीमती गहने पश्चिम एशिया और अफ्रीका के सुदूर कोनों तक भेजे जाते थे। मनकों को बनाने की तकनीक और उपकरणों का समुचित विकास हो चुका था और यहाँ का धातु विज्ञान पिछले 4000 साल से भी अधिक से समय की कसौटी पर खरा उतरा था।

1961 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने खुदाई का कार्य फिर से शुरु किया और टीले के पूर्वी और पश्चिमी पक्षों की खुदाई के दौरान उन वाहिकाओं और नालों को खोद निकाला जो नदी के द्वारा गोदी से जुड़े थे। प्रमुख खोजों में एक टीला, एक नगर, एक बाज़ार स्थल और एक गोदी शामिल है। उत्खनन स्थल के पास ही एक पुरात्तत्व संग्रहालय स्थित हैं जिसमें सिंधु घाटी से प्राप्त वस्तुएं प्रदर्शित की गयी हैं।

References: Internet & Competitive books.